der Form nach auch patron. von कु ग्रिडन sein. Çat. Ba. 14,5,5,20. 7,8, 26. Âçv. Ça. 12,15. Pravarâdej. in Verz. d. B. H. 58. MBe. 2,111. H. 32, Sch. (का ग्रिडन्य). Lalit. 382.395.396.423. Burn. Lot. de la b. l. 126.489. Schiepner, Lebensb. 243 (13). Weber, Lit. 98.249. = विज्ञुगुप्त Trie. 2, 7,22. Grammatiker Taitt. Prât. 1,5. 2,5.6.7. व्याकर एकि ग्रिडन्य Burn. Intr. 530. Lot. de la b. l. 489. Im pl. कु ग्रिडनें! P. 2,4,70. विद्भिकी-ग्रिडन्य Çat. Br. 14,5,5,22. 7,2,28. स्नाज्ञातका ग्रिडन्य स्नाज्ञात s. u. स्नाज्ञात. के ग्रिडन्ययोताल Schiepner, Lebensb. 255 (23). — Vgl. के ग्रिडनें und को ग्रिडन्य.

काणिउन्यायन und ंने patron. von नाणिउन्य Çat. Br. 14,5,5,20. 7,

काणिउल्प Lalit. 3 falsche Form für काणिउन्य, ed. Calc.: काणिउल्य. काणिउल्य Hir. 123,15. fgg. Lalit. Calc. 1,15 falsche Form für काणिउन्य; ebend. 7: ज्ञानकाणिउल्य (vgl. u. स्राज्ञाता)

काणिउल्यक (काणिउन्यक?) m. ein best. giftiges Insect Suca. 2,257, 13. 287, 19.

कार्णडापर्य (von कुर्णडापर्य) m. pl. N. pr. eines Kriegerstammes P. 5,3,116. Davon कार्णडापर्यीय m. der Fürst dieses Stammes ebend.

काएय (von कृषि) n. Lähmung der Hände Suça. 1,269,2 1. 270,18. कात s. u. काडा.

कातर्पं adj. (मलर्थ) von कुतप gaṇa ज्यातस्त्राद् zu P. 5,2,103, Vårtt. कातस्कृत (von कुतस् + कुतस्) m. N. pr. (?) gaṇa कास्काद् zu P. 8, 3,48.

कातस्त patron. (?): कातस्तावधर्यू ऋरिमेजयञ्च जनमेजयञ्च Рачкат. Вв. in Ind. St. 1,35.

कात्व (von कृतुक) n. gaņa युवादि zu P. 5,1,130. 1) Neugier, ein Interesse für eine Sache, ein dringendes Verlangen nach Etwas: चর्त्र-तः कै।तकोद्धीवां सभा चित्रार्षितामिव Rága-Tar. 5, 359. संजातकात्काः 434. उपजातकात्का: Hir. 123, 15. कात्काविष्टसृदयः Pankar. 128, 18. किं तु कीतुकं में मक्तप्रभा । म्राजन्मचरितं तावच्क्स में Катийь. ६, ६. कातुकात् Ніт. 80, 4. Катнія. 4, 182. 5, 134. तच्चेष्टालाकनक्रीडाकातुकात् 18, 153. त्तम्) केतिकालोकितं जनैः 125. पश्यत्यास्तं नृपं तस्या लज्जाकीतुकयोर्दशि । क्रभुद्रन्योऽन्यसंगर्दे। रचयत्यां गतागतम् ॥ ३,६६. ४८७. ४४, १६. १८. यश्चवारि शतानि — भ्राकाना विद्धाति कैात्कवशादेकाक्मात्रे कविः Дийктаз. 68, 13. - 2) was Neugier -, Interesse erregt, eine seltsame -, unterhal--tende Erscheinung: वासी नामापि कामः स्पात्सेगमं दर्शनं विना। तासी टुकसंगमं प्राप्य यत्र द्रवित कात्कम् ॥ Рबर्भद्रवरः १४,३५. पश्य कातुकम् ४,१४. रवंप्रायाग्यकं पश्यन्कात्कानि परे परे KATHAS. 6, 65. केातुकान्वेषिन् VBT. 43, 11. का रिकालक Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 945. - 3) Feierlichkeit, Festlichkeit, eine feierliche Cerimonie, inshes. die einer Vermählung vorangehende Cerimonie mit der Hochzeitsschnur; die Hochzeitsschnur selbst: म्रम्माकं तु मनार्थापरचितप्रासादवापीतरक्रीडाकानन-केलिकातुक्रजुषामायः परं तीयते Вилктя. 3,15. वैवाव्हिकैः कात्कसंवि-घानै: Киміяль. 7,2. कद्यं मुतायाः पितृगेक्कात्कं निशम्य देक्: मुरवर्य ने-इते Bake. P. 4,3,13. इयं च भूर्भगवता न्यासितोहभरू। सती । श्रीमद्रिस्त-त्परन्यासीः सर्वतः कृतकात्का ॥ 1, 17, 26 (Burnour: et reçevant de ses beaux pieds l'impression du plaisir). प्रविश्य मंगधेशस्य वत्सेशो ऽप्यय मन्दिरम् । सनायं पतिवल्लीभिः कै।तुकागारमाययै। ॥ तत्र पद्मावतीमत्तर्द्-

र्श कृतकातुकाम् (darauf folgt die Vermählung) Kathås. 16, 77. कातुकं च स किल लपावसाने विवाह इत्यवद्मात् Daçak. 94, 5. Vgl. die folgenden compp. — Nach den Lexicographen: — कुतुका, कुतृक्ल, कातूक्ल Ak. 1, 1, 2, 31. H. 926. an. 3, 29. Med. k. 75. — इच्का, श्रीक्लाप Verlangen Trik. 3, 3, 9. H. an. Med. — मुद्द, क्ष Freude; उत्सव Fest; नर्मन् Belustigung, Scherz; विवाहसूत्र Hochzeitsschnur H. an. Med. — मङ्गल Trik. H. an. — परंपरापातमङ्गल Med. — पारंपरापाताच्यात H. an. — भाग्य Trik. — गीतादिभाग Genuss von Gesang u. s. w. Med. — गीतादि Gesang u. s. w.; भागकाल Zeit des Genusses H. an. — Vgl. कुतूक्ल, कात्वल.

कातुकांक्रिया (का » + क्रिया) s. eine seierliche Handlung, Vermählungsseier: ता — भूपती — कन्यकातनयकातुक्रियां स्वप्रभावसर्शों वित्तितः RAGB. 11,53.

कातुकागृरु कि। + गृरु) n. Hochzeitshaus Sch. zu Çiñku. GRHJ. 1,12. कातुकातारण (का। + ता।) m. n. ein bei sestlichen Gelegenheiten errichteter Ehrenbogen: गापुरद्वारमागेषु कृतकातुकातारणाम् (पुरीम्) Buic. P. 1,11,14.

कैतिकमङ्गल कि। + मः) n. eine feierliche Cerimonie: तता नागस्य भवने कृतकातुकमङ्गलः ॥ श्रेषधिभिर्विषद्योभिः सुरुभीभिर्विषयतः ॥ мви. 1,5056. युक्ते मुहर्ते विजये सर्वाभरणाभूषितैः । आतृभिः सिंक्तो रामः कृतकातुकमङ्गलः ॥ स. 1,73,8. यद्यभूमिमिमां प्राप्ताः कृतकातुकमङ्गलः ॥ स. 1,73,8. यद्यभूमिमिमां प्राप्ताः कृतकातुकमङ्गलः ॥ मम कन्याद्यतम्ना कि दीप्ता वङ्गरिवार्चिषः ॥ १४ (an beiden Stellen vor der eigentlichen Hochzeitsfeier). स तस्य वचनाहाज्ञा तं वै युत्रमृतध्वम् । तम- स्वर्म् समिर्गण्य कृतकातुकमङ्गलवेषा विणाद्धान्या १४ कृतकातुकमङ्गलवेषा विणाद्धान्या १४ कृतकातुकमङ्गलवेषा

कातुकागार् का॰ + म्रगार् oder म्रागार्) m. n. Festgemach, Hochzeitsgemach: कानककलशपुक्तं भिक्तशोभासनायं निर्तावर् चितशय्यं कातुकागा-रमागात् Kumâras. 7,94. Katuàs. 16,76 (s. u. कातुक 3.).

कातुक्ल (von कृतुक्ल) n. gaṇa य्वादि zu P. 5,1,130. 1) Neugier, ein Interesse für eine Sache, ein dringendes Verlangen nach Etwas AK. 1,1,2,31. н. 926. तता कैातुक्लाद्रामा लह्मपाश्च — म्निम् — पप्टक्तुः R. 3, 15, 8. इट्रमत्यइतं रृष्ट्रा सर्वेषां ना मकाख्ते । कैातूक्लं मक्डातं कि-मिंदं साध् कघ्यताम् ॥ १. एतिद्व्हाम्यक्ं श्रातुं परं कातूक्लं कि मे 1.1.7. Çîx. 14,19. जातकातुक्लः adj. R. 1,9,23. क्रिचित्कातुक्लान्वितः Mirk. P. 26.8. म्रातिकातुक्लान्वितः 23,3. विषयव्यावृत्तकातुक्लः VIKB. 9. कि-मेतन्त्रात्मिच्हामि सखे कैातूरुलं हि में । मङ्दस्य परिज्ञाने R. 4,13,14. विस्तरभ्रवणे जातं कातुक्लमतीव मे MB#. 1,2284. तस्याः कातुक्लं ह्वा-सीन्मलं प्रति 3,17076. R. 6,26,41. मक्त्बातूक्लं मे अस्ति क्रिश्चन्द्रकथा प्रति Mins. P. 8,1. वनं क्समितं द्रष्ट्रं परं कैतिहरूलं व्हि मे Siv. 4,26. R. 3, 4,42. मकीत्रुक्लम् adv. mit Neugier Çik. Cn. 119,3. — 2) was Neugier —, Interesse erregt, eine ausserordentliche Erscheinung Megn. 48. — 3) eine feierliche Cerimonie; im Prakrt: सउत्तलाए पत्याणकाह कलाउँ सङ्जीकरीम्रलि Çак. Сн. 74, 10 (Çак. еd. Вонть. 47, 15: पत्थाणकाडुमं काित्का शिवत्तिडुं). — Nach Trik. 3,3,89 ist काैतुक्ल auch = प्रशस्त. 🗕 vgl. कुतूक्ल, कैातुक.

कातूरुत्य n. = कुतूरुल, कातूरुल gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124. कातामत (von कुतस् + मत) n. N. eines Sûkta (?): सङ्ख्रबाङ्गगापत्य इति कातामतेन मङ्गवृत्तपलानि पश्चिप्य प्रयट्केत् Gobb. 4,5,15.16.